RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका

(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

उद्धव चरित्रांक

₹50/-

दिसम्बर 2019 | वर्ष 07 | अंक 02

धर्म-दर्शन-अध्यात्म
एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

जुलाई–दिसम्बर
2019 ई.
विक्रम सम्वत् 2076

वर्ष : 07 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
फोन नं.: 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारी पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
परमपवित्र उद्धवचरित्र.....ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी.....1
नन्दनन्दन कृष्ण के नित्यसहचर–उद्धव.....प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र.....3
प्रभु श्रीकृष्ण के प्रिय सखा ज्ञान निपुण उद्धव जी.....जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज..7
भगवान् के अर्चाविग्रह उद्धव.....प्रो० रामसलाही द्विवेदी.....9
ज्ञान, भक्ति रसावतार श्रीउद्धवजी का चरित्र.....डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल.....12
उद्धव शरणागति मीमांसा.....डॉ० अनिलानन्द.....16
भगवदुद्धव संवाद में वेदार्थोपबृंहण.....डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा.....19
परम भागवत श्री उद्धव जी .....प्रो० रामराज उपाध्याय.....22
उद्धवगीता–भगवद्गीता में भगवत्स्वरूप.....डॉ० देवानन्द शुक्ल/डॉ० प्रीति शुक्ला....24
परम भागवत उद्धव .....वैद्य तनसुखराम शर्मा.....27
श्रीमद्भागवत में उद्धवचरित्र.....प्रो० मिनति रथ.....31
श्रीकृष्ण सुहृदुद्धव.....डॉ० दिनेश कुमार गर्ग.....35
महात्मा सूरदास की काव्यचेतना में "उद्धव" .....प्रो० शिवशङ्कर मिश्र.....38
उद्धव चरित्र–एक सामान्य अध्ययन.....डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट).....41
श्रीकृष्ण के उद्धव.....डॉ० सुनीता कुमारी.....43
श्रीकृष्ण के सखा उद्धव.....डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली.....46
उद्धव की व्रजयात्रा.....डॉ० विजय कुमार पाण्डेय.....48
श्री उद्धवजी गोपांगनाओं के हितैषी.....डॉ० रामकिशोर मिश्र.....50
भक्तशिरोमणि उद्धव.....डॉ० आशुतोष गुप्त.....51
श्रीमद्भागवतोक्त उद्धवचरित्र.....डॉ० अरुणिमा.....56
उद्धव की दृष्टि में मैया यशोदा, गोपियाँ.....डॉ० रीतेश कुमार पाण्डेय.....60
ज्ञानी उद्धव और गोपियाँ.....श्वेता.....63
पौराणिक साहित्य में उद्धव.....डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल.....66
श्रीमद्भागवत में उद्धव–गोपी संवाद.....योगेश कुमार मिश्र.....68
योगीश्वर श्रीकृष्ण के परममित्र उद्धव .....विजय गुप्ता.....70
उद्धव जी का विभिन्न दृष्टियों से मूल्यांकन.....डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 73
उद्धव शतक : एक अध्ययन.....डॉ० धनंजय शर्मा.....76
उद्धव एक महान साधक.....डॉ० कृपाशंकर मिश्र/मुदित पाण्डेय 81
श्रीमद्भागवत पुराण में उद्धव जी.....निराली.....83
उद्धव.....वन्दना तिवारी.....86
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

भगवदुद्धव संवाद में वेदार्थोपबृंहण

डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा
वेद विभाग
श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि. नई दिल्ली

पुराण-वाङ्मय में ध्रुव, प्रह्लाद एवं अक्रूर आदि भगवद्भक्तों का वर्णन आता है। भगवद्भक्तों में उद्धव अन्यतम हैं। उद्धवजी बाल्यकाल में ही भगवान् की ओर उन्मुख हो गये थे।[1] भगवान् स्वयं उद्धवजी को आत्मवेत्ता एवं अधिकारी मानते थे।[2] भगवान् यह चाहते थे कि उद्धवजी लोगों को शिक्षा दें, क्योंकि उद्धवजी भगवान् से न्यून नहीं थे।[3] उद्धवजी भगवान् से अलग नहीं होना चाहते थे।[4]

भक्त भगवान् से यही प्रार्थना करते हैं कि हमें स्वर्गादि सुख प्राप्त न हों केवल भगवद्भक्ति प्राप्त हो।[5] जैसे पक्षियों के पंखहीन बच्चे अपनी माता की प्रतीक्षा करते हैं, वैसे ही भगवान् की प्राप्ति के लिये व्याकुल रहते हैं।[6] जैसे चुम्बक के पास लोहा स्वयं आकृष्ट होता है, उसी प्रकार भक्त का चित्त भी भगवान् की ओर आकृष्ट होता हे।[7] इस प्रकार से अनन्यभाव से भगवान् का भजन करने वाले भक्तों का उद्धार तो होता ही है, वे भगवान् के प्रिय भी होते हैं। भगवान् स्वयं उद्धवजी को प्रेमी भक्त कहते हैं।[8] भक्ति से पाप नष्ट होते हैं।[9] भक्त अपने को ही नहीं बल्कि पूरे संसार को पवित्र करता है।[10]

श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्ध में प्रथम अध्याय से चतुर्थ अध्याय तक विदुर जी एवं उद्धव जी का संवाद वर्णित है, जिसके अध्ययन से हम उद्धवजी की भक्ति किस प्रकार की थी, जान सकते हैं। दशम स्कन्ध पूर्वार्ध के अध्याय 46 एवं 47 में उद्धवजी का भगवान् के दूत बनकर ब्रज में जाने का प्रसंग है। भगवान् के विरह से व्यथित नन्दबाबा, यशोदा मैया एवं गोपियों को उद्धवजी ह. भगवच्चरित्र का वर्णन करते हुये एवं भगवान् का सन्देश सुनाकर आनन्दित करते हैं। भगवान् के विरह में व्यथित गोपियों की कैसी दशा थी, इसका निदर्शन 47वें अध्याय के भ्रमर-गीत में हमें देखने को मिलता है। उद्धवजी कृष्णवंशियों में प्रधान, भगवान् के प्रिय सखा, बृहस्पति के शिष्य एवं बुद्धिमान् थे।[11] श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में छठवें अध्याय से उन्तीसवें अध्याय तक भगवदुद्धव-संवाद है। इस कल्याणकारी संवाद में अवधूतोपाख्यान, आत्मतत्त्वविवेचन, सत्सङ्ग की महिमा, भक्तियोग, ध्यानविधि, सिद्धियों को स्वरूप, भगवद्विभूति-वर्णन, वर्णाश्रम-धर्म, यम-नियमादि विवेचन, ज्ञान-कर्म-भक्तियोग, सांख्ययोग, तत्त्वों की संख्या, पुरुष-प्रकृति-विवेचन, त्रैगुण्य-निरूपण एवं क्रियायोग के साथ ही अनेक उपाख्यानों का भी वर्णन है।

इन प्रसङ्गों के साथ ही छब्बीसवें अध्याय में पुरुरवा की वैराग्योत्पत्ति का भी वर्णन है। ऋग्वेद में पुरुरवा-उर्वशी संवाद आता है।[12] ऋग्वेद के संवाद-सूक्तों में यह संवाद एक दुःखान्त संवाद है। पुरुरवा उर्वशी के साथ रहता था, जब उर्वशी पुरुरवा को छोड़कर जाने लगी तो पुरुरवा ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की। उर्वशी अपने को वायु के समान दुष्प्राप्य कहती है।[13] अठारह मन्त्रों के इस सूक्त में पुरूरवा का विलाप ही अधिक है। वह इतना अधिक दुःखी हो जाता है कि कहता है कि स्त्रियों का कोई सखा नहीं होता।[14] पाश्चात्य विचारक मानते हैं कि दुःखान्त नाटक पश्चिम की ही अवधारणा है। पुरूरवा-उर्वशी संवाद एवं यम-यमी संवाद[15] दुःखान्त ही हैं।

इतिहास एवं पुराणों से वेद का उपबृंहण करना चाहिये।[16] कृष्णद्वैपायन को वेद का विभाजन करने के कारण ही व्यास कहा गया है। व्यासरूप से स्वयं नारायण ही अवतीर्ण हुये थे।[17] द्वापर युग के अन्त में मनुष्यों की आयु एवं बुद्धि क्षीण होने से वेद का विभाजन किया गया।[18] व्यासजी पराशर एवं सत्यवती के पुत्र थे।[19] एक वेद से ही चार संहिताओं का निर्माण व्यासजी ने किया।[20] चार शिष्यों को चारों वेद की शिक्षा दी।[21]

ऋग्वेद के पुरूरवा-उर्वशी संवाद का ही कथा विस्तार हमें भगवदुद्धव संवाद के क्रम में श्रीमद्भागवत के ग्यारहवें

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका
(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

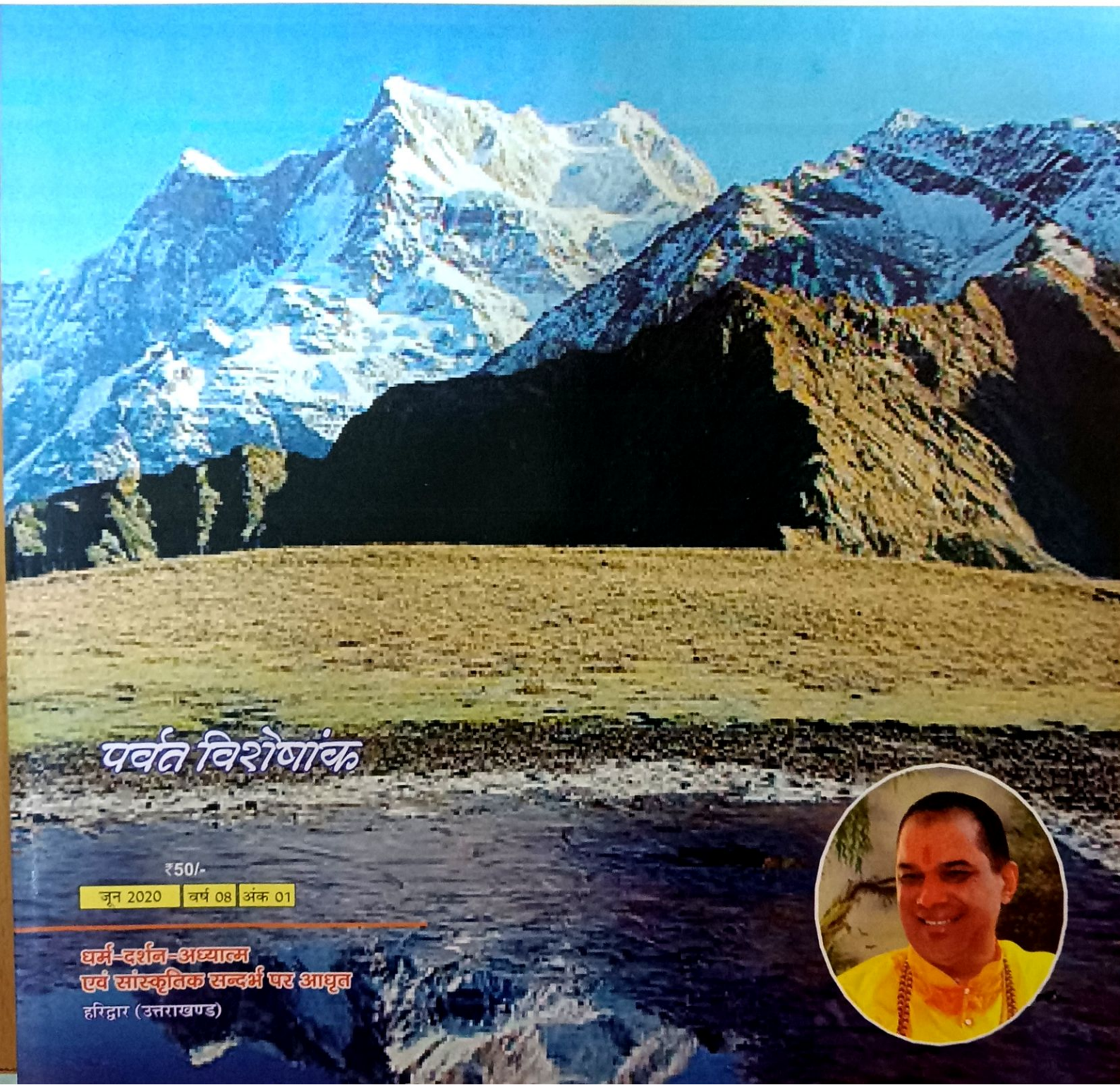

पर्वत विशेषांक

₹50/-
जून 2020 | वर्ष 08 | अंक 01

घर्म-दर्शन-अध्यात्म
एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

जनवरी–जून
2020 ई.
विक्रम सम्वत् 2077

वर्ष : 08 अंक : 01

संरक्षक :

प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

मोबाइल नं. 9456328499

ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक

मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :

श्री जयराम आश्रम

भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)

फोन नं.: 01334-260251

ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

जम्बूद्वीप (एशिया) की पौराणिक पर्वतीय.....प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र.....1
प्रकृति ही पर्वत और पर्वत ही प्रकृति है.....जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज..5
हम और हमारे पर्वत.....डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली.....8
संस्कृत साहित्य में हिमालय वर्णन.....डॉ० भवानीदत्त काण्डपाल.....10
दिव्यधाम चित्रकूट.....प्रो० रामसलाही द्विवेदी.....12
ध्यान हेतु सर्वोत्तम स्थल हैं पर्वत.....प्रो० रामराज उपाध्याय.....16
पर्वत : कथ्य एवं तथ्य..... .....डॉ० सुनीता कुमारी.....18
वैदिक वाङ्मय में पर्वतों का वैशिष्ट्य.....डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा.....22
'हिमालय' का प्राकृतिक एवं .....डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल/डॉ० विक्रान्त उपाध्याय.....27
गोवर्धन पर्वत परिक्रमा के मध्य.....डॉ० अनिलानन्द.....32
पर्वत.....वैद्य पं० तनसुखराम शर्मा.....39
महाकवि कलिदास की कृतियों में.....प्रो० किशनाराम बिश्नोई/दीपक.....43
मेघदूत के पर्वत–प्रसङ्ग.....डॉ० रामविनय सिंह.....47
संस्कृत वाङ्मय में पर्वत वर्णन.....डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट).....50
वनपर्व में पर्वत.....डॉ० आशुतोष गुप्त.....53
प्रकृति पोषक पर्वत.....डॉ० कृष्ण गोपाल दीक्षित 'दद्दा जी'.....58
कामदगिरि हैं पादसेवन भक्ति के अनुपम.....प्रो० रामबहादुर शुक्ल.....61
कालिदास साहित्य में वर्णित..... डॉ० अरुणिमा.....66
पौराणिक भूगोल में भारतीय पर्वत.....प्रो० मिनति रथ.....68
वाल्मीकि का पर्वत प्रेम.....डॉ० शालिमा तबस्सुम.....70
हिमालय का सामाजिक एवं सांस्कृतिक .....डॉ0 धनञ्जय शर्मा.....77
द्रोणगिरि पर्वत..... डॉ० मनोज कुमार जोशी.....82
पर्वतीय संस्कृति उत्तराखण्ड .....श्रीमती गंगा गुप्ता/डॉ0 आशुतोष गुप्त.....84
जैनदर्शन में पर्वतीय सन्दर्भ : तत्त्वार्थसूत्र..... विजय गुप्ता.....88
उत्तराखण्ड गढ़वाल की पर्वतीय श्रृंखलाएँ.....डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 91
हिमाद्रि वैभव.....डॉ० विजय लक्ष्मी.....96
धार्मिक दृष्टि से पर्वतों की महिमा..... डॉ० तारादत्त अवस्थी 99
भारतीय संस्कृति एवं पर्वत.....निराली.....101
पर्वतों के वैदिक सन्दर्भ : एक विवेचन.....पवन.....103
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

वैदिक वाङ्मय में पर्वतों का वैशिष्ट्य

डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा
श्रीला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

पर्वत शब्द का निर्वचन करते हुए निरुक्तकार यास्क कहते हैं कि यह वर्ष पर्व से युक्त होता है। पर्वशब्द पूरणार्थक पृ धातु से निष्पन्न है। चूँकि शिलाशिखरादि इसे पूर्ण करते हैं, अतः इसे पर्वत कहते हैं। यदि प्रीञ् इस धातु से निष्पन्न होगा तो तर्पणार्थक होगा। तर्पणार्थक होने पर पूर्णिमा, अमावास्या (अर्द्धमासात्मक काल की सन्धि का समय) का वाचक होगा, क्योंकि इनमें देवताओं को (हव्य से) एवं पितरों को (कव्य से) तृप्त करते हैं।[1] तर्पणार्थक होने पर भी शिलात्मक पर्वत का भी वाचक हो सकता है, क्योंकि यह अपने आश्रितों को तृप्त तो करता ही है। पितरों को तृप्त करने वाला पार्वणशब्द भी इसी अर्थ का ही बोधक है। पर्व (एक निश्चित समयावधि) में श्रद्धा के साथ जो कार्य (पितरों के उद्देश्य से) होता है, वह पार्वणश्राद्ध है। यास्काचार्य ने सन्धि की समानता अर्थात् जैसे पर्वत में शिलाशिखरादि की सन्धि होती है, वैसी ही सन्धि (समयात्मक) होने के कारण कालिविशेष को पर्व माना है।[2]

किसी भी वृत्ति की समानता से अर्थ को मुख्य मानने के पक्षधर निरुक्तकार यास्क[3] पर्वत के ही पर्यायवाची शब्द को गिरि को ऊपर की ओर उठा हुआ होने के कारण निष्पन्न मानते हैं।[4] मेघ को भी अन्तरिक्ष में समुद्गीर्ण होने के कारण गिरि कहते हैं।[5] पर्वशब्द पदों का भी वाचक है।[6] निघण्टु में मेघ के तीस नाम बताये गये हैं।[7] इनमें से आरम्भ के उन्नीस नाम मेघ एवं पर्वत के समान हैं।[8] समुद्र-ऋषिप्रोक्त सामुद्रिक-शास्त्र में सूर्य, चन्द्रादि पर्वत वर्णित हैं, इसी प्रकार अंगुलियों के भी पर्व होते हैं। ये पर्व शरीरावयव एवं उनकी सन्धियों के वाचक हैं। ईख, बाँस आदि की दो गाँठों के बीच के भाग को भी पोर कहते हैं। अतः निरुक्त के निर्वचन सार्वत्रिक हैं। महाभारत के अठारह पर्व एवं अवान्तर पर्व विभिन्न प्रसङ्गों से पूरित हैं, अतः ये भी आचार्य यास्क के निर्वचन के सिद्धान्त के अनुसार पर्व कहलाते हैं। अतः महाभारत के पर्व भी अन्वर्थक सिद्ध होते हैं।

सिनीवाली[9] शब्द के निर्वचन में वालशब्द का अर्थ पर्व (उत्सव, समयविशेष एवं सन्धि के साथ) वरण किये जाने के कारण किया गया है।[10] ऋग्वेद के एक मन्त्र[11] में पर्वशब्द शरीरावयव का ही वाचक है।[12] ऋग्वेद[13] एवं माध्यन्दिनसंहिता[14] में समान रूप से आये एक मन्त्र में पर्वशब्द (शरीरावयवों की) सन्धि का वाचक है[15], ये सन्धियाँ अस्थि आदि की हो सकती हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र[16] में गङ्गा, यमुना आदि कई नदियों के नाम आये हैं। परुष्णी यह भी नाम आया है। निरुक्तकार यास्क के अनुसार इरावती को ही परुष्णी कहते हैं, क्योंकि यह पर्व से युक्त होती है।[17] यहाँ भी पर्व से तात्पर्य सन्धि एवं अवयवों से है। निरुक्त में पर्वशब्द से आशय भा (प्रभा अथवा दीप्ति) से भी दो स्थानों में किया गया है।[18] यास्कीयसिद्धान्तानुसार ही उत्सवों को भी पर्व कहा जाता है।

हिमालय पर्वत गङ्गा का उद्गम स्थान है। ऋग्वेद में विपाट् (विपाशा) एवं शुतुद्री दोनों नदियों का उद्गम पर्वतों से ही कहा गया है।[19] निरुक्त[20] के अनुसार इन्द्र के संस्तविक (साथ स्तुति किये गये) देवों में अग्नि, सोम एवं वरुण इत्यादि के साथ पर्वत भी आते हैं। माध्यन्दिन संहिता के एक मन्त्र[21] में इन्द्रापर्वता (इन्द्रापर्वतौ) देवताद्वन्द्व के रूप में आये हैं। वाजसनेयिप्रातिशाख्य[22] के अनुसार वायुरहित द्वन्द्व समासों में पूर्वपद का अन्तिमस्वर दीर्घ हो जाने से इन्द्रपर्वता इन्द्रापर्वता हो जाता है। ऋग्वेद में वर्णन आता है कि इन्द्र ने

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

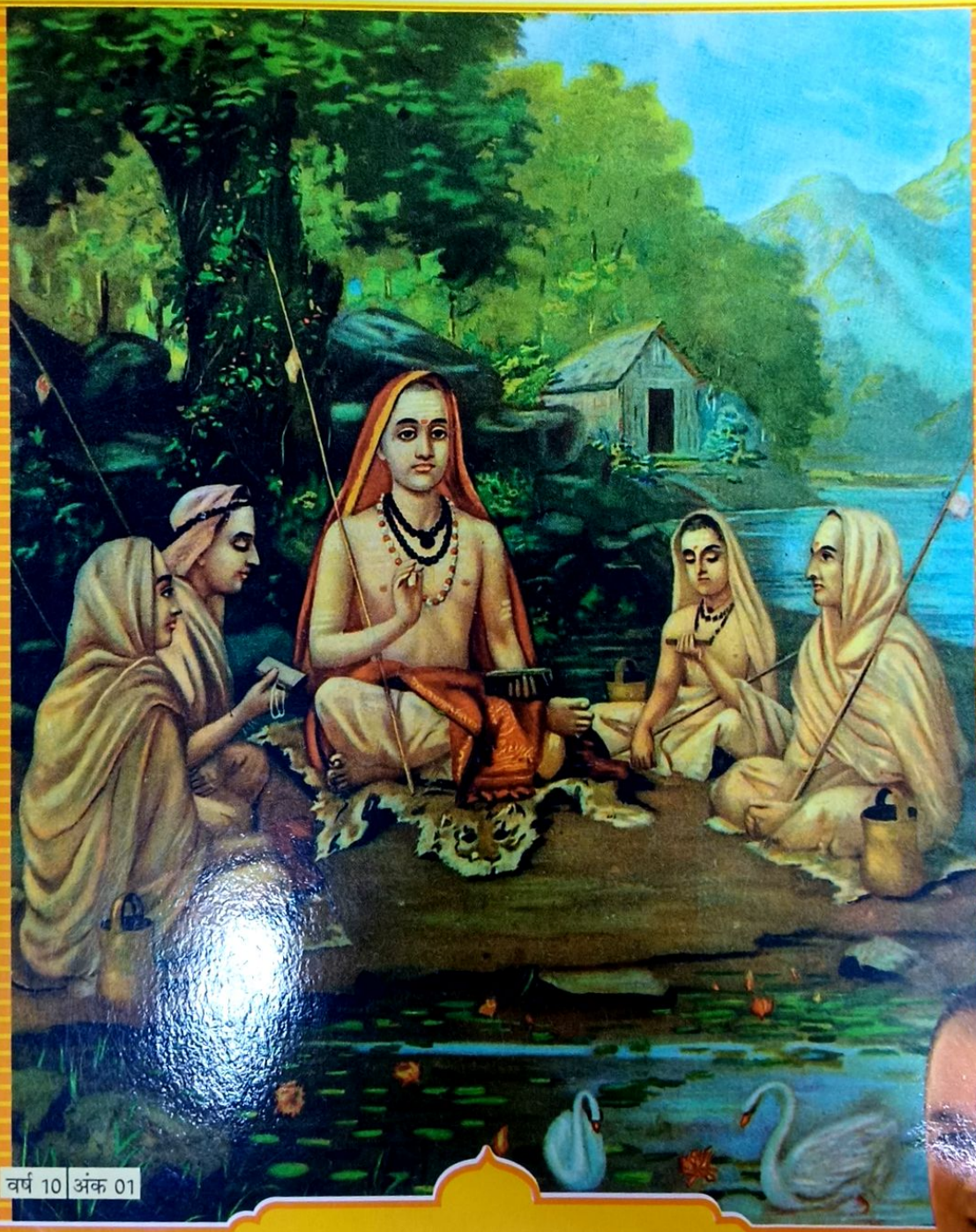

शङ्कराचार्य विशेषाङ्क

जून 2022 | वर्ष 10 | अंक 01

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक [illegible] पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2022 ई.
विक्रम सम्वत् 2079

वर्ष : 10 अंक : 01

संरक्षक :

प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक

मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :

श्री जयराम आश्रम

भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)

मोबाइल नं. 01334-260251

ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं जयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

शांकर वेदान्त : एक विमर्श.......डॉ० सुनीता कुमारी.......1
भगवत्पाद शंकराचार्य.......डॉ० बद्री प्रसाद पंचोली.......7
शक्ति उपासना में श्री शङ्कराचार्य.......प्रो० रामराज उपाध्याय.......9
शिवभक्त आदिगुरु शङ्कराचार्य.......डॉ० ललिता.......12
आद्य शंकराचार्य जी का प्रेरणाप्रद.......प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा.......16
उपनिषदों में वर्णित नैतिक मूल्य.......डॉ० आशुतोष गुप्त/बबली.......21
आचार्य शङ्कर की प्रेरणा एवं प्रभाव.......डॉ० अनिलानन्द.......25
शांकरभाष्य के सन्दर्भ में.......प्रो० कमला चौहान/अंजली.......29
'भगवान् शङ्कराचार्य आविर्भूयात्.......डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट).......35
सौन्दर्यलहरी में वर्णित त्रिपुरसुन्दरी.......प्रो० रामबहादुर शुक्ल.......38
जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित.......डॉ० आशुतोष गुप्त/राजमोहन.......47
आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित.......डॉ0 आरती बाली.......54
आद्य श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य.......वैद्य पं० तनसुख शर्मा.......56
आचार्य शंकर का दार्शनिक चिन्तन.......डॉ० अरुणिमा.......63
आदिगुरु शंकराचार्य का जीवन दर्शन.......डॉ० धनंजय शर्मा.......66
उपनिषदों में आत्मतत्त्व विवेचन.......डॉ० आशुतोष गुप्त / तनुजा.......71
आदिगुरु शङ्कराचार्य का अद्वैत वेदान्त......डॉ० कुसुम डोबरियाल/दीपक कुमार द्विवेदी.76
आचार्य शङ्कर का ब्रह्मसूत्र तथा.......महाबीर शुक्ल.......82
सनातन धर्म एवं श्रीभगवत्पाद.......अंकित सिंह यादव.......88
भगवत्पाद आदि शंकराचार्य की केदार यात्रा.....सतीश नौटियाल.......95
सनातन संस्कृति के संरक्षण में आदिशङ्कर.......पवन चन्द्र.......98
वर्तमान समाज में आदिशंकराचार्य जी.......शुभदीप घोष.......102
अध्यात्म में अद्वैत.......मुदित कुमार पाण्डेय.......106
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

आद्य शंकराचार्य जी का प्रेरणाप्रद जीवन

प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा
वेद विभाग
श्रीला०ब०शा०रा०सं०विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

> "आचार्य शङ्कर जैसे महापुरुष किसी एक देश, जाति, धर्म अथवा कुल के लिये नहीं अपितु समस्त मानव जाति के लिये अवतरित हुए थे। उन्होंने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया था। उनका कुल सदाचारी तथा वैदिक मर्यादाओं का विशेष अनुयायी था।"

महान् दार्शनिक, प्रकाण्ड विद्वान्, वीतराग संन्यासी, धर्ममूति आचार्य शंकर का जीवनवृत्त मानव जाति के लिये प्रेरणा का अमर स्रोत है। वे उन सभी गुणों की सजीव प्रतिमा थे, जिनका वर्णन अग्नि पुराण में इस प्रकार किया गया है-

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र च दुर्लभा॥[1]

इस संसार में श्रेष्ठ मानव योनि मिलना ही कठिन है, विद्या प्राप्ति, कवित्व तथा प्रतिभा आदि की प्राप्ति तो अति कठिन है। आचार्य शंकर के जीवन में इन सभी गुणों का अद्भुत सामञ्जस्य था। प्राचीन भारतीय मनीषियों में आत्म-प्रदर्शन की भावना न होने के कारण वे अपनी रचनाओं में अपने व्यक्तिगत जीवन का संकेत नहीं करते थे। अतः उनके जीवन चरित्र से सम्बन्धित यत्किञ्चित् सामग्री भी हमें मिलती है, वह उनके अनुयायियों द्वारा लिखित है। पूर्वापर अवलोकन से विदित होता है कि महापुरुषों के भक्त अनुयायियों द्वारा जो जीवन-चरित्र उल्लिखित होता है, वह कभी-कभी अतिरञ्जित रूप में भी प्रस्तुत हो जाता है। ऐसी स्थिति में महापुरुषों के जीवन-वृत्तान्त को विशुद्ध रूप में उपस्थित करना एक विकट समस्या होती है।

अलौकिक प्रतिभा के धनी आचार्य शंकर का जीवन-चरित्र लिखने में निम्नलिखित तत्त्व बाधक हैं-

1. आचार्य शंकर ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन का संकेत मात्र भी नहीं किया है।
2. किसी समसामयिक व्यक्ति के द्वारा लिखित आचार्य शंकर का जीवन-चरित्र उपलब्ध नहीं है।
3. शङ्कर-विजय, शङ्करदिग्विजय अथवा शङ्कराभ्युदयादि नाम की तथा अन्य भी रचनायें आचार्य शङ्कर के आविर्भाव काल के शताब्दियों पश्चात् की रचनायें हैं।

जनवरी-जून 2022 | ISSN-0975-8739